

काला धन और उसका उपाय



धन दिखने में काला या गोरा नहीं होता। जो चोरी का है वो काला धन और जो सामने है वो काला धन नहीं है। कहने को तो हमारे देश का elite class बहुत प्रगति कर रहा है परंतु अभी भी देश में 50 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं, यानी कि आधा देश! अगर हम सचमुच इतनी प्रगति कर रहे हैं तो इतनी असमानता क्यों? प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4QXVOUDVoWVRBRVU/edit?usp=sharing

भारत को 250 वर्षों की गुलामी से स्वतंत्र कराने में 6 लाख 40 हजार शहादतें लगीं। ये शहीद अहिंसावादी रहे हों, गैर अहिंसावादी विचारधारा के रहे हों या किसी भी मत, संप्रदाय और धर्म के रहे हों; सभी के मन में एक ही सपना था कि अंग्रेजों के बाद भारत का अपना तंत्र हो और अपनी पहचान हो। 1947 में

भारत की आबादी 34 करोड़ थी जो आज़ादी के बाद 121 करोड़ तक पहुँच चुकी है। उस समय भारत का कृषि उत्पादन 4.5 करोड़ टन थी, जो आज़ादी के 65 सालों के बाद 21 करोड़ टन के लगभग है! 1947 में भारत का औद्योगिक उत्पादन 1 लाख करोड़ रूपए था, जो आज 10 लाख करोड़ रूपए से ज्यादा है। यानी आबादी अगर 4 गुणा बढ़ी है तो उत्पाद 5-10 गुणा अधिक बढ़ा है। इसके बावजूद सरकार खुद यह कहती है कि देश 44 करोड़ से अधिक लोग ऐसे हैं जिनके पास दो वक्त खाने के लिए रोटी नहीं है, 20 करोड़ से अधिक लोग बेरोजगार हैं जिन्हें काम की सख्त जरूरत है, बची आबादी में से अधिकांश वे लोग हैं जो रोटी तो खाते हैं पर पता नहीं अगली रोटी कब मिलेगी! अगर यह है भारत निर्माण तो इसकी असल वजह क्या है?

आज से लगभग 400 वर्ष पहले यूरोप में एक अर्थशास्त्री हुआ था जिसने यह सिद्धांत दिया था कि किसी भी देश का वैभव उस देश की आबादी की विपरीत दिशा में चलता है अर्थात् अगर आबादी बढ़ेगी तो देश में गरीबी और बेरोज़गारी भी बढ़ेगी। आज इस सिद्धांत को खुद उस अर्थशास्त्री की जन्मस्थली नकार चुकी है! यूरोप में आया पूंजीवाद इस सिद्धांत को सीधी चुनौती देता है! यूरोप के कई देशों सहित अमरीका, चीन, जापान, स्वीडन, डेनमार्क आदि देशों ने इस सिद्धांत को गलत साबित किया है। केवल भारत ही एक ऐसा देश है जिसने बिना सोचे समझे अपनी आर्थिक नीतियों को इस सिद्धांत के अनुरूप ढालने की कोशिश की और यहाँ की सरकारों ने हमेशा भारत की गरीबी और भुखमरी के लिए यहाँ की जनता को दोषी माना! पिछले 65 वर्षों में अमरीका में 2 गुणा, यूरोप में 3 गुणा और चीन में कई गुणा जनसंख्या में वृद्धि हुई है। हमें देखने को यह मिलता है कि इन देशों में जनसंख्या की वृद्धि के साथ गरीबी के बजाय अमीरी की वृद्धि हुई है और वो भी हज़ारों गुणा! जितने भी scandinavian देश हैं वो जनसंख्या की वृद्धि के लिए जनता को प्रेरित करते हैं जैसे उदाहरण के तौर पर फ्रांस में एक से अधिक बच्चे होने पर पदोन्नति और कई आर्थिक पुरस्कार दिए जाते हैं।

एक बार राजीव जी ने यह जानने की कोशिश की, scandinavian देश इस बात पर ज़ोर क्यों देते हैं कि भारत जैसे गर्म देशों को अपनी आबादी कम करनी चाहिए और उनके जैसे ठंडे देशों में आबादी बढ़नी चाहिए। उनके कुछ वैज्ञानिक मित्र जो इनमें से कुछ देशों से थे, ने बताया कि उनको प्रकृति से वो उपहार नहीं मिले जो प्रकृति ने भारत जैसे देशों को दिए हैं। जैसे प्रकृति ने उन्हें धूप नहीं दी, उनके वहाँ फसलों में 12 मास बर्फ रहती है जिससे वहाँ कुछ नहीं उगता, वहाँ मिट्टी नहीं होती, वहाँ धातुएं और खनिज नहीं होते, वहाँ 6 मौसम नहीं होते, वहाँ फलों और खाने की चीज़ों में विभिन्नताएं नहीं होतीं आदि। इन देशों को भारत जैसे राष्ट्रों पर निर्भर रहना पड़ता है। अगर भारत जैसे देशों में आबादी बढ़ती है तो वहाँ के लोग उन संसाधनों का उपयोग करेंगे और इस तरह यूरोप और अमरीका जैसे देशों के पास कमी हो जाएगी। तब राजीव भाई को एक बात समझ में आई कि अगर भारत जैसे देशों में लोग कम होंगे और इन देशों में लोग ज्यादा होंगे तो ये लोग जनसंख्या की दृष्टि से समृद्ध होंगे और उतनी ही समृद्ध इनकी सेनाएं होंगी। भारत में लोग कम होंगे और जिस तरह ये देश भारत में अपनी कंपनियों द्वारा उद्योग स्थापित कर रहे हैं, उस तरह एक न एक दिन भारत की अर्थव्यवस्था पर इनका अधिकार स्थापित हो जाएगा जैसा ईस्ट इंडिया कंपनी ने किया था। उसके बाद वे भारत जैसे देशों के संसाधनों का उपयोग मनमाने ढंग से कर पाएँगे और उन्हें कोई रोक भी नहीं सकेगा! कांग्रेस के नेतृत्व से उन्हें बहुत आशा है और उन्होंने समय समय पर कांग्रेस की आर्थिक नीतियों को सराहा भी है! आने वाले 5 वर्ष इन सभी देशों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि एकमात्र कांग्रेस ही है जो उनके सपनों को पूरा कर सकती है और इस बार यह अंतिम चरण है क्योंकि बीते 15 वर्षों में जो भारत में लूट हुई वह कई गुणा ज्यादा है!

यदि एक उदाहरण लें चीन का तो वहाँ की सरकार ने कभी भी अपने देश की जनसंख्या को रूकावट नहीं माना। उनकी आर्थिक नीति production by masses पर आधारित है। उन्होंने अपने उद्योगों का विकेन्द्रीकरण किया हुआ है जिसका अर्थ है कि बड़े से बड़े प्रोजेक्ट को छोटे छोटे टुकड़ों में बाँट कर एक एक हाथ में काम सौंपा जाए! वे अपनी जनसंख्या को वरदान मानते हैं और यह

मानते हैं कि जितने ज्यादा हाथ होंगे काम करने के लिए, उतना ही अधिक देश तरक्की करेगा! परंतु भारत सरकार का विश्वास ठीक इससे उल्टा है। उसका मानना है कि एक बड़े प्रोजेक्ट को किसी बड़ी तकनीक से ही पूरा किया जाए और उसमें कम से कम लोगों का योगदान हो। कम लोग होंगे काम करने के लिए तो कम लोगों के पास ही समृद्धि होगी। बाकी बचा जो विशाल जनसमुदाय है उसे पंचवर्षीय योजना या नरेगा का झांसा दे देंगे। समाज और उद्योग में अधिपत्य उन्हीं गिने चुने लोगों का होगा जो तकनीक और उद्योगों से जुड़े हुए हैं, बाकी सब राम भरोसे! इसीलिए सरकार की कोशिश है कि भारत में काम करने वाला एक भी हाथ अधिक पैदा न हो और इसके लिए वे इस कोशिश में हैं कि भारत में वालमार्ट जैसे रिटेल चेन खुलें ताकि कम से कम रोजगार हों। रोजगार कम होंगे तो अपने आप लोगों को यह अकल आ जाएगी कि बच्चे पैदा करने से अच्छा है कि शादी ही न की जाए! एक चीन है और एक भारत। चीन की आबादी हम से भी अधिक है, उसका निर्यात हमसे भी अधिक है, विश्व में उसका सम्मान हमसे भी अधिक है और फिर भी वहाँ लोगों के पास रोजगार है! वास्तव में जनसंख्या कभी समस्या नहीं होती बल्कि जनसंख्या को प्रबंध करने की व्यवस्था निकम्मी और नकारा होती है जिसका भारत एक ज्वलंत उदाहरण है!

सन 1900 तक स्विट्ज़रलैंड की आबादी 3.5 लाख थी जो सन 2000 तक लगभग एक करोड़ तक पहुंची। वहीं उनके यहाँ अमीरी 10000 गुणा तक बढ़ गई! उसके ठीक उल्टे भारत में गरीबी कई गुणा बढ़ गई इन सौ सालों में। इन दोनों देशों में एक बहुत ही सूक्ष्म संबंध है और वो यह कि भारत से संपत्ति निकल कर स्विट्ज़रलैंड में जाती है लेकिन वहाँ से संपत्ति निकल कर किसी और देश में नहीं जाती। इस संपत्ति को जमा कराने के काम करते हैं भारत के ये नेता! इस परंपरा को शुरू करने वाले थे वी के मेनन जो नेहरू की कैबिनेट में शामिल थे। उन्होंने जीप घोटाला किया था सन 1948 में और रूपए स्विस् बैंक में जा कर जमा करा दिए थे! इस भ्रष्टाचार पर नेहरू ने संसद में कहा था कि ऐसे भ्रष्टाचार तो राजनीति का अभिन्न अंग हैं! इसके बाद हर नेता जा कर वहाँ पैसे जमा करा आता है। बीते 65 सालों में एक अनुमान के अनुसार भारत

का 4,80,00,00,00,00,00,000 या 48 लाख करोड़ से भी अधिक रुपया स्विस् बैंक में जमा है! भारत के 6 लाख गाँवों में अगर इस पैसे को बाँटा जाए तो हर गाँव के हिस्से में 8 करोड़ रुपये आते हैं! इतना पैसा अगर हर गाँव में हो तो कोई व्यक्ति भूखा क्यों मरे?

मजे की बात तो यह है कि नेता खुद लूट के पैसे का उपभोग नहीं कर पाते! दुनिया में स्विट्ज़रलैंड ही एक ऐसा देश है जहाँ यह कानून है कि जो व्यक्ति पैसा जमा कराएगा, वही उसे निकाल भी पायेगा। वहाँ आप किसी को अपना nominee नहीं बना सकते! मरने के बाद व्यक्ति का पैसा बैंक डकार जाता है। धन की मुख्यतः 3 ही गत हो सकती हैं - या तो कोई उसे आपसे लूट ले, छीन ले या आप उसका उपभोग करें या फिर आप उसे दान में दे दें। नेता दान नहीं देते और उपभोग की भी एक सीमा होती है। कोई भी व्यक्ति एक सीमा के बाद भोग नहीं कर पाता, उसके बाद उसमें ऊब पैदा हो जाती है। नेता के पैसे इसीलिए डूब जाते हैं क्योंकि वह न तो दान देता है और एक सीमा से ऊपर उसका उपभोग नहीं कर पाता। यह एक सच्ची घटना है कि महाराष्ट्र के एक मुख्यमंत्री और वित्तमंत्री ने मिलकर काला धन स्विस् बैंक में जमा कराया। दोनों में से किसी को भी बैंक से पैसे निकालने और जमा कराने की अनुमति बैंक से मिल गई। सरकार गिरने के बाद मंत्री जी के हाथ में सत्ता नहीं रही। उनके सहभागी यानी भूतपूर्व वित्त मंत्री ने स्विस् बैंक का सारा पैसा निकालकर अपने निजी खाते में, सिंगापुर में जमा करा दिया। एक दिन जब भूतपूर्व मुख्यमंत्री स्विट्ज़रलैंड गए तो पता चला कि खाता शून्य है। सूत्रों के हवाले से पता चला कि पैसा सिंगापुर में जमा कराया गया है। मंत्री जी सिंगापुर गए तो वहाँ पता चला कि पैसा उनके पार्टनर के खाते में जमा है। यह खबर सुनने के एक घंटे के अंदर ही मंत्री जी बैंक की लिफ्ट में ही चल बसे! उच्च रक्तचाप के कारण उन्हें हृदयाघात आया था। ये महान व्यक्ति कांग्रेस पार्टी के एक नेता थे। कांग्रेस ने इस बात को दबाने का भरसक प्रयत्न किया। अब ये खबर भी आपको इन्टरनेट पर नहीं मिलेगी जैसे अभिषेक मनु सिंघवी की विडियो नहीं मिलती!

वास्तव में भारत की गरीबी का सबसे प्रमुख कारण है भ्रष्टाचार, न कि जनसंख्या! अगर व्यवस्था ठीक नहीं है तो उसका जिम्मेदार लोगों को कैसे ठहराया जा सकता है? भ्रष्टाचार इसीलिए फल फूल रहा है क्योंकि जो नीतियाँ इसे सहारा देती हैं वे सब अंग्रेजों ने बनाई थीं भारत को लूटने के लिए! सन 1947 के बाद इन सभी व्यवस्थाओं का उन्मूलन करने के बजाय हमने इन्हें भविष्य के लिए आधार बना लिया और इसी पर अपने संविधान की रचना की! भारतीय संविधान के 34,735 कानून इस भ्रष्टाचार और लूट के साक्षी हैं! इसका एक उदाहरण है हमारी कर व्यवस्था। Income Tax Act के तहत भारत का प्रत्येक व्यक्ति औसतन 5500 रूपए से अधिक का टैक्स देता है। यह टैक्स इसीलिए दिया जाता है ताकि देश का विकास किया जा सके, 121 करोड़ लोगों का विकास किया जा सके परंतु ये धन लगता है मंत्रियों की सेवा में। हमारे देश के राष्ट्रपति पर एक साल में 22 करोड़ रूपए से अधिक का खर्च आता है! राष्ट्रपति भवन में 350 कमरे हैं और इनकी देखरेख के लिए 1084 कर्मचारी हैं। एक बगीचा है जिसकी देखरेख के लिए 800 माली हैं। एक 18 डिब्बों की रेलगाड़ी है जो सिर्फ राष्ट्रपति के लिए है और वह पूरी तरह से वातानुकूलित है। इस ऐसे तैयार रखा जाता है कि राष्ट्रपति अब आए-तब आए यानी इसमें बिजली, पानी और सभी सुख सुविधाएँ 24 घंटे चालू रहती हैं जिन पर एक दिन का खर्च ही लगभग 2 लाख रुपये से अधिक है! इसी तरह राष्ट्रपति के नीचे प्रधान और उपप्रधान समेत अन्य कार्यकारिणी को भी जोड़ लिया जाए तो यह खर्चा एक साल में 350 करोड़ को छू जाता है। ये सारी व्यवस्था अंग्रेजों के वायसराय के लिए थी जिसकी जगह अब भारत में राष्ट्रपति ने ले ली है। अंग्रेज चले गए लेकिन व्यवस्थाएं बदस्तूर जारी हैं। भारत देश में एक भिखारी भी आग जलाने के लिए जो माचिस खरीदता है, उस पर भी टैक्स होता है। ये उस पैसे को भी नहीं छोड़ते!

भारत में राष्ट्रपति से लेकर एक सरकारी चपरासी तक का खर्चा एक दिन का 1800 करोड़ रूपए है! सोचिए, 1 साल का यह कितना बनेगा? एक बार महाराष्ट्र के एक गाँव में 3 किसान भूख से मर गए। राज्य सरकार ने तीनों किसानों की विधवाओं को 1 लाख रूपए देने की पेशकश की। जब तक किसान

जिन्दा थे, तब तक कोई फ़िक्र नहीं थी और जब मर गए तो सरकार ने उनकी कीमत एक लाख रूपए लगा दी! इसके लिए वहाँ एक समारोह रखा गया, मुख्यमंत्री ने भाषण दिया और समारोह के अंत में तीनों विधवाओं को 1 लाख के चेक दिए गए। अब उन विधवाओं को यह समझ नहीं आया कि वे उन चेक का करें क्या, क्योंकि वे तो पढ़ी लिखी भी नहीं थीं तो फिर बैंक में खाते का तो सवाल ही नहीं उठता! किसी ने नेता जी से सवाल पूछा कि आप इन्हें कैश में पैसा क्यों नहीं दे देते तो मंत्री जी बोले कि इसकी व्यवस्था नहीं है। इस पर उस पत्रकार ने कहा कि पैसे देने की ऐसी व्यवस्था तो नहीं है पर पैसे लेने की व्यवस्था कैश में क्यों है? मंत्री जी चुप! समारोह के अंत में जब एक कलेक्टर से पूछा गया कि इस समारोह में कितना खर्च आया तो उसने कहा कि 3 लाख रूपए बांटने के इस समारोह में कुल खर्च आया 27 लाख रुपया! यह सिर्फ एक घटना थी, इसका एक ज्वलंत उदाहरण है कॉमनवेल्थ घोटाला जिसमें जितना धन खर्च होना चाहिए था उससे हज़ारों गुणा अधिक जनता की खून पसीने की कमाई को लुटाया गया! भारत देश में पैसा ऐसे बर्बाद किया जाता है! भारतीय गरीब हैं परंतु भारत कभी गरीब नहीं रहा! अपनी लूट का जिम्मेदार किसी को तो ठहराना ही है न, तो लगा दो इल्जाम जनता पर और कह दो कि बच्चे पैदा करना छोड़ दें! हम तो ऐसे ही देश और संसाधनों को लूटेंगे!

सन 1930 में अंग्रेज़ों ने भारत का बजट बनाया जो 130 करोड़ रुपये था। इन 130 करोड़ रुपयों में से 110 करोड़ रूपए केवल सरकारी पगार और ऐशोआराम के लिए था। आज तथाकथित आज़ादी के बाद जो बजट पेश होता है उसमें 80% राशि सरकारी पगार और विदेशी कर्ज़ को चुकाने के लिए होती है! 20% पगार से देश का विकास करने की बात कही जाती है! फिर, इन गोरे और काले अंग्रेज़ों में फर्क कहाँ है? आज़ादी से पहले वालों की चमड़ी गोरी थी, 1947 के बाद वालों की काली है। बस इतना ही फर्क है। कर्ज़ चुकाने के लिए ब्याज़ दिया जाता है और ब्याज़ चुकाने के लिए कर्ज़ लिया जाता है। इसी दुष्चक्र में फंसा है आज का हमारा देश! पिछले 25 वर्षों में इतनी विदेशी कंपनियों को भारत में घुसने का मौका मिला जिसके लिए वो मरते दम तक कांग्रेस का अहसान नहीं भूलेंगी। इन सभी कंपनियों पर कस्टम ड्यूटी 350% से कम करके 30% तक

कर दिया है जिससे हमारे देश के स्वदेशी उत्पाद महंगे हो गए हैं। इसका एक उदाहरण है मलेशिया से आने वाला पाम तेल। इसकी वजह से सरसों का तेल महंगा हो गया है जिसने न जाने कितने किसानों और व्यापारियों को बर्बाद कर दिया है। मलेशिया से इस तेल का आयात अंधाधुंध जारी है। इस तेल का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि यह जितना सस्ता है उतना ही खतरनाक! यह उच्च रक्तचाप से लेकर heart attack का कारण है। आप जितने भी refined oil खाते हैं, उन सबमें यह डलता है। पिछले 25 सालों में इन्हीं नीतियों के चलते लगभग 10 लाख से ज्यादा भारतीय व्यापारियों के हाथ से धंधा फिसल गया है! यही नहीं अमरीका और चीन जैसे देशों में यदि आपको उद्योग के लिए कर्ज लेना हो तो वहाँ की सरकारें 1-1.5% ब्याज़ पर कर्ज मुहैया कराती हैं जबकि हमारे अपने ही देश में हमारे द्वारा ही चुनी हुई सरकार 16% ब्याज़ पर कर्ज देती है! अब कौन कहेगा कि देश का विकास हो रहा है?

एक बार भाई राजीव जी उड़ीसा के बेरहामपुर के एक गाँव में गए। वहाँ के किसानों ने एक विचित्र सी व्यथा उनसे कही। व्यथा यह थी कि अपनी फसल के लिए जब उन्हें पानी चाहिए होता था, तब सरकार उसे छोड़ती नहीं थी लेकिन जब फसल पक कर तैयार हो जाती थी तो नहर में इतना पानी छोड़ दिया जाता था कि सारी फसल बर्बाद हो जाती थी! इस बात की शिकायत लेकर जब भाई राजीव जी Irrigation Ministry में गए तो वहाँ उन्हें पता चला कि यह एक कानून के तहत ऐसा होता था जो सन 1910 में अंग्रेज़ों द्वारा पारित किया गया था! जब राजीव जी ने इसके इतिहास को जानना चाहा तो उन्हें पता चला कि सन 1910 में उड़ीसा बंगाल प्रान्त में आता था। उन दिनों एक आन्दोलन बहुत जोरों पर था जो बंगाल विभाजन के विरुद्ध था। इसमें किसानों ने बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया था। किसानों को प्रताड़ित करने के उद्देश्य से ही अंग्रेज़ों ने इस कानून को बनाया था जो 1947 के बाद भी बनिस्पत जारी है! इसी तरह अंग्रेज़ों के बनाये ऐसे 34000 कानून हैं जो देश पर लागू हैं और जब तक रहेंगे, तब तक देश में अन्याय का ही बोलबाला रहेगा। जाहिर सी बात है कि ये कानून अंग्रेज़ों ने भारत के शोषण के लिए बनाये थे और अगर अभी भी ये जारी हैं तो सरकार की मंशा भी उनसे कोई अलग नहीं है! इस पूरी

व्यवस्था को जब तक नहीं बदला जाता, तब तक हम खुद को स्वतंत्र नहीं कह सकते!

दुनिया में ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो। अगर काला धन एक समस्या है तो उसका समाधान भी है! समाधान यह है कि स्विस् बैंक की शर्तों के मुताबिक वे किसी भी देश की राष्ट्रीय संपत्ति को नहीं रख सकते और इस नियम का भारत लाभ उठा सकता है। यदि संसद में इस प्रस्ताव को बहुमत मिल जाए कि विदेशों में जमा काला धन राष्ट्रीय संपत्ति है तो संसार की कोई शक्ति उसे भारत में आने से नहीं रोक सकती! लेकिन यह सब होगा कैसे? यह होगा ध्यान समझ कर अपनी वोट देने की शक्ति का उपयोग करके। भारत की जनता को दबाव बनाना होगा संसद पर इस प्रस्ताव को पारित करने के लिए, तभी देश के 121 करोड़ लोगों को न्याय मिल सकेगा। यूरिया घोटाले में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर मात्र एक हफ्ते में घोटाले का पैसा भारत आया था। इसी तरह पाकिस्तान, बंगलादेश और फिलीपींस की सरकारों ने अपना पैसा वापिस लिया है। भारत भी अपना हक ले सकता है और इन सभी गद्दार नेताओं को सबक सिखा सकता है। जरूरत है तो बस देश की जनता को जागने की!

“मुश्किल से मुश्किल व्यवस्था भी बदली जा सकती है, संकल्प शक्ति होनी चाहिए बस! और यह संकल्प शक्ति देश के नागरिकों को ही रखनी होगी!”

- श्रद्धेय भाई राजीव दीक्षित जी

इन्कलाब जिंदाबाद!

वंदे मातरम...